OM-9- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 09/07/2021 9:39 AM Page 8

परमात्म ऊर्जा

जो सोचें वह हो जाए कैसे?

जैसे कच्चे और पक्के मटके में अन्तर होता है, उसी प्रकार मानव के कच्चे और पक्के विचारों में भी अन्तर होता है।

जब कोई मानव पहले-पहले विचार करता है कि मुझे हर परिस्थिति में शान्त रहना है, तब वह मानो शान्ति का कच्चा घड़ा तैयार करता है, लेकिन अशान्ति विरोध, प्रतिकूलता, नकारात्मकता की बूँदे पड़ते ही विचारों का कच्चा घड़ा गलने और बहने लगता है।

तब तक वह सोचता है कि मैं शान्त रहना चाहता हूँ, परन्तु फिर भी मेरा मन अशान्त क्यों हो जाता है? कारण यह है कि संकल्प रूपी घड़े को पकाया नहीं गया है। इसे पकाने के लिए चाहिए ईश्वरीय संग रूपी अग्नि, जिसे दूसरे शब्दों में योगाग्नि कहा जाता है।

योगाग्नि में तपाने का अर्थ है- परमपिता परमात्मा के मानसिक संग से उत्पन्न लगन, स्नेह, दृढ़ता, सफलता, विजय और समानता के विश्वास में संकल्प को रंगाना। ऐसा संकल्प जब बार-बार परमात्मा पिता के संग का बल पाता है तो उन्हीं के समान दृढ़ और शक्तिवान बन जाता है।

भगवान कहते हैं किसी भी संकल्प रूपी बीज को फलीभूत बनाने का साधन है- सदा बीज रूप बाप से हर समय सर्व शक्तियों का बल उस बीज में भरते रहना, तो आपके संकल्प फलीभूत हो जायेंगे। आपके बोल, कर्म, वृत्ति से सबको हल्केपन की अनुभूति हो, इसमें सहनशक्ति को धारण करने की आवश्यकता है। जो भी आये उसे कुछ ईश्वरीय तोहफा दें, कोई भी खाली हाथ न जाए। आप मास्टर स्नेह के सागर, सारी दुनिया आप पर क्रोध करे, पर आप दुनिया की परवाह मत करो। बे-परवाह बादशाह बनो, तब आपकी श्रेष्ठ वृत्ति से शक्तिशाली वायुमंडल बनेगा और आपकी श्रेष्ठ वृत्ति भी व्यर्थ को समर्थ में बदल देगी।

» समय व्यर्थ न गँवायें «

समय बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। जैसे समय आगे बढ़ रहा है, तो समय पर मंज़िल पर पहुँचने वाले को किस गति से चलना पड़े ? समय कम है और प्राप्ति ज़्यादा करनी है। तो थोड़े समय में अगर ज़्यादा प्राप्ति करनी हो तो गति को तीव्र करना पड़ेगा ना...। समय को देख रहे हो और अपने पुरूषार्थ की गति को भी जानते हो। तो समय अगर तेज़ है और आपकी गति तेज़ नहीं है, तो समय अर्थात् रचना आप रचता से भी तेज़ हुई..! रचता से रचना तेज़ चली जाए तो उसे अच्छी बात कहेंगे..? या रचना से रचता आगे होना चाहिए? सदा तीव्र पुरूषार्थी आत्मायें बन आगे बढ़ने का समय है। अगर आगे बढ़ते कोई भी साइड सीन्स को देख रूकते हो, तो रूकने वाले ठीक समय पर पहुँच नहीं सकेंगे। कोई भी माया का आकर्षण साइड सीन है। साइड सीन पर रूकने वाला मंजिल पर कैसे पहुँचेगा...?

इसलिए सदैव तीव्र पुरूषार्थी बन आगे बढ़ते चलो। ऐसे नहीं समय पर पहुँच ही जायेंगे, अभी तो समय पड़ा है - ऐसे सोचकर अगर धीमी गति से चलेंगे तो समय पर धोखा मिल जायेगा। बहुत काल का तीव्र पुरूषार्थ का संस्कार, अन्त में भी तीव्र पुरूषार्थ का अनुभव करायेगा। तो सदा तीव्र पुरूषार्थी, कभी तीव्र, कभी कमज़ोर नहीं। ऐसे नहीं थोड़ी-सी बात हुई कमज़ोर बन जाओ..! इसको तीव्र पुरूषार्थी नहीं कहेंगे। तीव्र पुरूषार्थी कभी रूकते नहीं, उड़ते हैं। तो उड़ते पंछी बन उड़ती कला का अनुभव करते चलो।

एक-दूसरे की कमज़ोरी की न धारणा करो, न वर्णन करो। वर्णन होने से वह वातावरण में फैलता है। अगर कोई सुनाये भी तो दूसरा शुभभावना से उससे किनारा कर ले। यह नहीं कि इसने सुनाया, मैंने नहीं कहा। लेकिन सुना तो सही ना...! जैसे कहने वाले का बनता है, सुनने वाले का भी बनता है। परसेन्टेज़ में अन्तर है, लेकिन बनता तो है ना...? व्यर्थ चिंतन या कमज़ोरी की बातें नहीं चलनी चाहिए।

बीती हुई बात को भी रहमदिल बन समा दो। समाकर शुभभावना से उस आत्मा के प्रति मनसा सेवा करते रहो। जब प्रकृति के 5 तत्वों के प्रति भी आपकी शुभभावना है, ये तो फिर भी सहयोगी ब्राह्मण आत्मायें हैं। भले ही संस्कार के वश कोई उल्टा भी कहता, करता या सुनाता है लेकिन आप उस एक को परिवर्तन करो। एक से दो तक, दो से तीन तक, ऐसे व्यर्थ बातों की माला की दीपमाला ना हो जाए..! तो यह गुण धारण करो। किसी का सुनना, सुनाना नहीं है लेकिन समाना है। सहयोगी बन मनसा से या वाणी से आगे बढ़ाना है। होता क्या है एक का मित्र होता, उस एक का फिर दूसरा मित्र होता, दूसरे का फिर तीसरा मित्र होता, ऐसे व्यर्थ बातों की माला बड़ा रूप ले लेती है। और चारों ओर फैल जाती है। इसलिए इन बातों पर अटेन्शन...!

कथा सरिता

एक आदमी ने एक गुलाब लगाया और उसे ईमानदारी से पानी पिलाया, और इसके खिलने से पहले, उसने इसकी जांच की। उसने कली को देखा जो जल्द ही खिल जाएगी और कांटे भी। और उसने सोचा, "इतने तेज कांटों से भरे पौधे से कोई सुंदर फूल कैसे आ सकता है?" इस विचार से दुःखी होकर, उसने गुलाब को पानी देने की उपेक्षा की और खिलने के लिए तैयार होने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई।

तो यह कई लोगों के साथ है। हर आत्मा के भीतर, एक गुलाब है। जन्म के समय हमारे अंदर लगाए गए ईश्वर जैसे गुण हमारे दोषों के कांटों के बीच बढ़ते हैं।

हम में से कई लोग खुद को देखते हैं और कई केवल कांटों, दोषों को देखते हैं। हमें निराशा होती है, यह सोचकर कि कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता है। हम अपने भीतर के अच्छे पानी की उपेक्षा करते हैं और आखिरकार, यह मर जाता है। हमें कभी भी अपनी क्षमता का एहसास नहीं होता है।

कुछ लोग अपने भीतर गुलाब नहीं देखते; किसी और को उन्हें दिखाना होगा। सबसे महान उपहारों में से एक जो व्यक्ति के पास है वह कांटों तक पहुंचने और दूसरों के भीतर गुलाब खोजने में सक्षम होना है।

यह प्यार की विशेषता है, किसी व्यक्ति को देखना और उसके दोषों को जानना, उसकी आत्मा में बड़प्पन को पहचानना और उसे यह एहसास दिलाने में मदद करना कि वह अपने दोषों को दूर कर सकता है। यदि हम उसे गुलाब दिखाते हैं, तो वह कांटों पर विजय प्राप्त करेगा। इस दुनिया में हमारा कर्त्तव्य है कि हम दूसरों को उनके गुलाब देख कर मदद करें न कि उनके कांटे। तभी हम उस प्यार को प्राप्त कर सकते हैं जिसे हमें एक-दूसरे के लिए

गुलाब को देखें कांटों को नहीं

महसूस करना चाहिए; तभी हम अपने बगीचे में खिल सकते हैं।

संकीर्तन का महत्व

वृंदावन के एक आश्रम में संकीर्तन का कार्यक्रम चल रहा था। हरि बाबा घंटा बजाकर 'हरिबोल-हरिबोल' की ध्वनि के बीच मस्त होकर झूम रहे थे। विरक्त संत उड़िया बाबा स्वयं भगवत नाम के संकीर्तन का आनंद ले रहे थे। अचानक चार-पांच व्यक्ति वहाँ पहुंचे। उन्हें देखते ही उड़िया बाबा समझ गए कि ये लोग बीमार और भूखे हैं। शायद कई दिनों से उन्हें भोजन प्राप्त न हुआ हो। उनकी दयनीय स्थिति देखकर बाबा की आँखों से आँसू निकलने लगे। वह एकाएक संकीर्तन से उठे और उन भूखे बीमार दरिद्रों को लेकर आश्रम में चले गए और एक सेवक से बोले, 'इन सबको कमरे में बिठाकर भोजन कराओ।'

उन्होंने स्वयं अपने हाथों से उनको भोजन परोसा तथा प्रेम से भरपेट खिलाया। बाबा ने एक वैद्य को संकेत कर उन्हें दवा भी दिलवाई और उनके लिए वस्त्रों की व्यवस्था कराई। हरि बाबा इस बात से हतप्रभ हो उठे थे कि उड़िया बाबा पहली बार संकीर्तन बीच में छोड़कर वहाँ से क्यों गए। उन्हें यह बहुत आश्चर्यजनक लग रहा था। वे उनके पास पहुंचे और पूछा,'बाबा, आपने ऐसा क्यों किया?'

उड़िया बाबा उनसे बोले,'भजन व संकीर्तन आदि तभी सार्थक होते हैं, जब उपस्थित लोगों में से कोई भी भूखा-प्यासा न हो। ये लोग भूखे थे और मैंने इन्हें भोजन कराकर तृप्त कराया है।' उड़िया बाबा पुनः संकीर्तन स्थल पर पहुंचकर संकीर्तन का आनंद लेने लगे।

एक दिन रामकृष्ण परमहंस किसी संत के साथ बैठे हुए थे। ठंड के दिन थे। शाम हो गई थी। तब संत ने ठंड से बचने के लिए कुछ लकड़ियां इक्ट्ठी की और धूनी जला दी। दोनों संत धर्म और अध्यात्म पर चर्चा कर रहे थे। इनसे कुछ दूर एक गरीब व्यक्ति भी बैठा हुआ था। उसे भी ठंड लगी तो उसने भी कुछ लकड़ियां इकट्ठा कर ली। अब लकड़ी जलाने के लिए उसे आग की ज़रूरत थी। वह तुरंत ही दोनों संतों के पास पहुंचा और धूनी से जलती हुई लकड़ी का एक टुकड़ा उठा लिया।

उस व्यक्ति ने संत द्वारा जलाई गई धूनी को छू लिया तो संत गुस्सा हो गए। वे उसे मारने लगे। संत ने कहा कि तू पूजा पाठ

अहंकार

नहीं करता तो तेरी हिम्मत कैसे हुई, तूने मेरे द्वारा जलाई गई धूनी को छू लिया। रामकृष्ण परमहंस ये सब देखकर मुस्कुराने लगे। जब संत ने परमहंसजी को प्रसन्न देखा तो उन्हें और गुस्सा आ गया। उन्होंने परमहंस जी से कहा, "आप इतना प्रसन्न क्यों हैं? ये व्यक्ति अपवित्र है, इसने गंदे हाथों से मेरे द्वारा जलाई अग्नि को छू लिया है तो क्या मुझे गुस्सा नहीं होना चाहिए?"

परमहंस जी ने कहा, 'मुझे नहीं मालूम था कि कोई चीज़ छूने से अपवित्र हो जाती है। अभी आप ही कह रहे थे कि सभी इंसानों में परमात्मा वास है। और थोड़ी ही देर बाद आप ये बात खुद ही भूल गए।' उन्होंने आगे कहा, 'दरअसल इसमें आपकी गलती नहीं है। आपका शत्रु आपके अंदर ही है, वह है अहंकार। घमंड की वजह से हमारा सारा ज्ञान व्यर्थ हो जाता है। इस बुराई पर काबू पाना बहुत मुश्किल है।

शिक्षा : जो लोग घमंड करते हैं उनके दूसरे सभी गुणों का महत्व खत्म हो जाता है। इस बुराई की वजह से सब कुछ बर्बाद हो सकता है। इसीलिए अहंकार से बचना चाहिए।